Poonam Shodh Rachna (ISSN 2456-5563)
(A Multidisciplinary, Peer Reviewed and Refereed Research Journal)
Vol. 2, Issue.XII, December 2023, PSR-2312020

स्वामी विवेकानन्द की स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सुनेहरी बाई , शोधकर्त्री, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. संजू झाँ , शोध–निर्देशक, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर

1 प्रस्तावना

स्वामी विवेकानन्द जीवन परिचय :

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, 1863 में कलकत्ता के एक क्षत्रिय परिवार में हुआ। इनके बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। नरेन्द्र के पिता श्री विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाईकोर्ट क वकील थे। इनकी माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। वे एक धर्म परायण महिला थी। उनका घरेलू वातावरण अत्यन्त धार्मिक था। इसलिए बचपन से ही धर्म–कर्म, पूजा–पाठ तथा धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन में उनकी रूचि उत्पन्न हो गई थी। बालक नरेन्द्र नाथ बचपन में बहुत शरारती थे। अपने कॉलेज जीवन में वे बहुत चंचल तथा कुशाग्र बुद्धि के विद्यार्थी थे। मुक्केबाजी, कुश्ती, तैराकी, घुड़सवारी आदि में भाग लेना उनके स्वभाव का अंग बन गया था। विद्यार्थी जीवन में नरेन्द्र अपने सुन्दर स्वस्थ प्रखर प्रतिभा तथा तर्कपूर्ण बातचीत के कारण अत्यन्त लोकप्रिय थे। एक बार उनके प्रधानाचार्य हेस्ट्र साहब ने उनके विषय में कहा था ''नरेन्द्र नाथ वास्तव में प्रतिभाशाली है। मैं बहुत दूर–दूर घुमा परन्तु ऐसी योग्यता और सम्भावना वाले किसी बालक के दर्शन मैंने नहीं किए। जर्मनी के विश्वविद्यालयों के दर्शन शास्त्र के छात्र भी ऐसे नहीं है। वह निश्चित ही जीवन में यश प्राप्त करेगा।

उस समय परतन्त्रता के कारण भारतीय जनमानस अत्यन्त हताशा, चेतनाहीन और मृत प्रायः हो गया था और अपनी अस्मिता खो बैठा था। अंग्रेजो ने अपनी कूटनीति से सम्पूर्ण भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। वे राजनैतिक वर्चस्व के साथ–साथ अपनी भाषा और संस्कृति का प्रभाव भी छोड़ रहें थे। हिन्दू कर्म काण्ड़ो, रूढ़ियों तथा परम्पराओं में फंसे अपने को निस्सहाय महसूस कर रहे थे। भारतीय जनता अपने को भ्रमित महसूस कर रही थी। उसे यह समझ में नहीं आ रहा था कि भारतीय संस्कृति श्रेष्ठ है या पाश्चात्य संस्कृति। भारतीय जनता दिग्भ्रमित थी और संक्रांति के ऐसे चौराहे पर खड़ी थी कि वह किधर जाए, निर्णय नहीं कर पा रही थी।

ऐसे संक्रांति के समय में हमारे देश में अनेक महापुरूषों में स्वामी विवेकानन्द का नाम हमारे सामने आता है। गुलामी के कारण भारतीय अपने धर्म, पराक्रम, शौर्य तथा कर्तव्य को भूल चुकें थे कि हमारी संस्कृति कितनी उदार तथा भव्य है। हम अपने पूर्वजों की धार्मिक तथा सांस्कृतिक धरोहर को भी भूल चुके थे। स्वामी विवेकानन्द

पहले व्यक्ति है जिन्होंने भारत की निर्जीव तथा मृतप्राय जनता में नए प्राण फूंके और ''उत्तिष्ठ जागृत प्राप्यवरांत बोधत ?'' का उद्घोष किया। इस दिव्य संदेश से स्वामी जी ने भारतीय जनता को झकझोर दिया और जागरण का मंत्र फूंका। हिन्दू धर्म के उदात्त तथा प्रगतिशील विचारों को प्रचारित कर भारत की कीर्ति पताका को विश्व रंगमंच पर फहराया और प्रगतिशील विचारों को प्रचारित कर भारत की कीर्ति पताका को विश्व रंगमंच पर फहराया और भारतवासियों के हर्दय सम्राट बनें।

भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी, शंकराचार्य, संत ज्ञानेश्वर, कबीर तथा तुलसी आदि ने जो अद्वितीय कार्य किए, उसी परम्परा की एक कड़ी के रूप में स्वामी जी भारतीय जनता के सम्मुख आए।

यह समझना बड़ा कठिन है कि इस देश में स्त्रियों और पुरूषों के बीच इतना भेद क्यों रखा गया हैं, जबकि वेदान्त की यह घोषणा है कि सभी प्राणियों में वहीं एक आत्मा विराजमान है। स्मृतियां आदि लिखकर और स्त्रियों पर कड़े नियमों का बन्धन डालकर पुरूषों ने उन्हें केवल सन्तानोत्पादक यन्त्र बना रखा है। अवनति के युग में जबकि पुरोहितों ने अन्य जातियों को वेदाध्ययन के अयोग्य ठहराया, उसी समय उन्होंने स्त्रियों को भी अपने अधिकारों से वंचित कर दिया। पर वैदिक और औपनिशदिक युग में तो मैत्रेयी, गार्गी आदि पुण्य स्मृति महिलाओं ने ऋषि का स्थान ले लिया था। सहस्त्र वेदज्ञ ब्राह्मणों की सभा में गार्गी ने याज्ञवलक्य को ब्रह्म के विषय में शास्त्रार्थ करने के लिए ललकारा था।

यदि स्त्रियां उत्पन्न हो जाए तो उनके बालक अपने उदार कार्यों के द्वारा देश का नाम उज्ज्वल करेंगे तब तो संस्कृति, ज्ञान, शक्ति और भक्ति देश में जागृत हो जायेगी।

स्वामी विवेकानन्द ने स्त्रियों के लिए आत्म–रक्षा की शिक्षा को आवश्यक माना। स्त्रियां बच्चों को शिक्षित करने का कार्य अच्छी प्रकार से कर सकती है। स्त्रियों की शिक्षा हेतु शहर और देहात में विद्यालयों की स्थापना करनी चाहिए। यथा सम्भव स्त्री शिक्षण केन्द्रों पर स्त्रियों को स्थानान्तरित करना चाहिए इससे प्रेरेणा और सम्प्रेषण स्थाई हो सकेगा। स्त्री शिक्षा के अन्तर्गत उनमें आत्मविश्वास, कला कौशल का विकास, दैनिक जीवनोपयोगी प्रवृत्ति तथा अभिवृत्ति का विकास, गृहकार्य, शिशुपालन और संस्कार, गृह प्रबंधन तथा अन्य क्षमतानुरूप विषय सम्मिलित होंगे।

इसके अतिरिक्त अंधविश्वासों, रूढ़ियों, जड़ताओं, बालू जैसे धरातल पर टिके सामाजिक व्यवहारों पर चिन्तन मनन कर स्त्रियों को इससे दूर रहने की आवश्यकता बताई।

स्त्रियां किसी भी तरह पुरूषों से किसी योग्यता में पीछे नहीं हैं। इस भाव का समस्त स्त्रियों में संचार करना परम आवश्यक है।

सीधा–सीधा एक वाक्य में हम निष्कर्ष पर पहुँचें तो यदि हम स्वामी विवेकानन्द की स्त्री शिक्षा विषय दर्शन का 10 प्रतिशत भी अनुपालन कर देंगे तो आज हमारा भारतवर्ष वहीं भारत बन जायेगा जिससे विदेशी प्रभावित होते थे।

भारतीय समाज में प्रायः सभी अंगो पर स्वामी विवेकानन्द ने अपने स्टीक विचार रखे हैं। भला भारतीय नारी पर वे कैसे मौन रहते ? वास्तव में नारी के प्रति उनका आदर और वर्तमान समय में उनकी दुर्दशा उन्हें द्रवित करती थी। स्वामी जी का विचार था कि यदि भारत को उन्नति करनी है, तो सर्वसाधारण जनता के साथ–साथ विशेषकर नारी जाति का उत्थान करना अनिवार्य है।

भारतीय स्त्रियों को केन्द्रित कर स्वामी विवेकानन्द ने कहा –''भारत ! तुम मत भूलना कि तुम्हारीं स्त्रियों का आदर्श सीता, सावित्री, दमयन्ती है।मत भूलना कि तुम्हारें उपास्य सर्वत्यागी उमानाथ शंकर है, मत भूलना कि तुम्हारा विवाह, तुम्हारा धन और तुम्हारा जीवन इन्द्रिय–सुख के लिए अपने व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं है। मत भूलना कि तुम जन्म से ही 'माता' के लिए बलिस्वरूप रखे गये हो, मत भूलना कि तुम्हारा समाज उस विराट् महामाया की छाया मात्र है।''

2 समस्या का औचित्य :

भारतीय मनीषियों के प्रश्न आखिरकार दर्शन के प्रश्न होते है। यह कथन एकदम सत्य है। हमें नारी शिक्षा को शैक्षिक समस्याओं के समाधान का भारतीय संस्कृति तथा दर्शन के आधार पर हल खोजना है तो हमें अपने राष्ट्र के उन चिंतको की विचारधारा को आधार बनाकर योजना बनानी होगी, जिन्होंने सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक संघर्षों का सामना करते हुए राष्ट्र हित में अपना जीवन समर्पित कर दिया। हमारें दृष्टिकोण एवं कार्यक्षेत्र का संकुचित हो जाना ही हमारे राष्ट्रीय पतन का एक मुख्य एवं प्रबल कारण है। विश्लेषणात्मक विज्ञान शास्त्रों का उदय भारतवर्ष में हुआ, इस राष्ट्रीय गुण को कालान्तर में इतना बढ़ा–चढ़ाकर बताया गया कि उसका प्राण तथा ओज नष्ट हो गए और वह क्षुद्रता और मूढ़ता के स्तर पर ऊतर आया। वर्तमान में कला, संगीत एवं धर्म का शोचनीय काम हो गया था। ''कला में अब उदार कल्पना नहीं रही। आकार का सामंजस्य एवं कल्पना की उदाश्रीता विलीन हो गई थी। किन्तु श्रृंगारात्मक एवं दिखावे की कृति के लिए महान प्रयत्न दृष्टिगोचर होने लगा है। ''आधुनिक संगीत में स्वरों का एक झमेला एवं वक्र रेखाओं का गोरखधन्धा हो गया था।

भारतीय दार्शनिको का लक्ष्य उदार बनाना, कूपमण्डूक्ता को त्याग कर बाहर आना, आत्मसात् करना और खुद को सार्वभैमिक बना देना है। भारतीय शैक्षिक समस्याएं किसी भी अन्य देश की समस्याओं से अधिक जटिल और महत्वपूर्ण है। ''जाति, धर्म, भाषा, शासन आदि सबको मिलाकर राष्ट्र बनता है।'' देश में आर्य, द्रविड़, तातार, तुर्क, मुगल एवं यूरोपीय सभी राष्ट्रो का रक्त सम्मिलित है।

ऐसे विचारक जिन्होंने आध्यात्म व अपने व्यवहार में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। इसके हेतु स्वामी विवेकानन्द से अधिक उपयुक्त अन्य कोई भी महापुरूष शिक्षा जगत में नहीं हो सकता है। अतः शोध छात्रा

ने इस शोध समस्या का चयन किया। अंत में शोध का उद्देश्य स्वामी विवेकानन्द की स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा का विश्लेषणात्मक अध्ययन से निकलने वाले तथ्यों को भी ज्ञात करना रहा है।

3 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

प्रस्तुत शोध कार्य में स्वामी विवेकानन्द की स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा का विश्लेषणात्मक अध्ययन को ज्ञात करने हेतु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, शोध कार्यों का अध्ययन किया गया है, जिनका उल्लेख निम्नवत् है –

डॉ. दुबे आर.एस. स्वामी (2000) दयानन्द सरस्वती व विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का अध्ययन में पाया कि इस अध्ययन के अनुसार दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा के संदर्भ में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत प्रकृति के सानिध्य में बालक की शिक्षा को उचित माना है। दयानन्द एवं विवेकानन्द दोनों ने ही शिक्षा के उद्देश्य के संदर्भ में आध्यात्मिक उद्देश्य को महत्व दिया। विवेकानन्द जी ने स्पष्ट कहा है कि बालक को ब्रह्मचार्य का पालन करते हुए शिक्षा ग्रहण करके आत्मिक उन्नति व मोक्ष को प्राप्त करना चाहिए। इस प्रकार विवेकानन्द जी के मत में शिक्षा गर्भ से लेकर निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।

चक्रवर्ती शरतचन्द्र (2003) ने विवेकानन्द जी के संग पुस्तक में छियालीस परिच्छेदो में स्वामी जी के साथ व्यतीत किए गए क्षणों का वर्णन किया है। जिसमें कलकत्ता, काशीपुर, हावड़ा, आलम्बानगर, मठ, बेलुड़ इत्यादि स्थानों पर स्वामी जी से हुई चर्चाओं का उल्लेख किया गया है। इन चर्चाओं में भारत की स्थिति, आध्यात्मिक विषय, विश्व में भारत का स्थान, नारी की स्थिति, भारतीय युवा वर्ग को संदेश, सामाजिक एकता आदि विषयों को स्पष्ट किया गया है।

शिव कुमार एम.बी.(2006) ''कन्ट्रीब्यूशन ऑफ स्वामी विवेकानन्द टू दी नेशनल इंट्रीग्रेशन ऑफ इंडिया'' ने अध्ययन किया और पाया कि इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि हम सम्पूर्ण विश्व में गौरवशाली देश के रूप में रहेंगे। स्वतन्त्रता एक ऐसी क्रिया है जो मनुष्य के परत आवरण को तोड़ती है और उसकी यात्रा भगवान के मिलने के बाद खत्म हो जाती है।

चौधरी छुट्टन सिंह (2008) ''प्रमुख उपनिषदो में निहित संवादो के शैक्षिक मनोवैज्ञानिक व दार्शनिक पक्षों का अध्ययन'' में शोधार्थी ने अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकला कि उपनिषद् में शिक्षा अक्षर ज्ञान तक सीमित न होकर आत्मिक उन्नयन, सामाजिक एवं मानवीय गुणों का विकास हैं। उपनिषद् मनोवैज्ञानिक तकनीकी पर आधारित शिक्षण विधियों का समर्थन करते हैं। उपनिषदों के संवादो में शिक्षक की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि शिक्षक ऐसा होना चाहिए जो विद्यार्थी की आवश्यकता को पिता की भांति समझे तथा सभी विद्यार्थियों को बिना भेदभाव के शिक्षा दें।

शर्मा मनु (2010) श्रीमद्भागवत में निहित शिक्षाओं का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन शोधार्थी के उद्देश्य श्रीमद्भागवत में निहित शैक्षिक पक्षों का चयन करना रहा। श्रीमद्भागवत के शैक्षिक निहितार्थ की शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, गुरू–शिष्य सम्बन्ध, अनुशासन, शिक्षण विधियों के संदर्भ में समीक्षा करना। शोधार्थी ने निष्कर्ष निकाला कि श्रीमद्भागवत में व्यक्ति मात्र को आनन्दमय जीवन जीने के लिए प्रेरित किया गया। भागवत में विभिन्न कक्षाओं के माध्यम से शिक्षा का वर्णन किया गया है। श्रीमद्भागवत से आचरण की पवित्रता पर बल दिया गया है।

4 समस्या कथन :

''स्वामी विवेकानन्द की स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

5 समस्या से उभरने वाले प्रश्न :

शोधकर्त्री द्वारा चयन की गयी समस्या से निम्नलिखित प्रश्न उभर कर सामने आते है –

1. स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी विवेकानन्द का क्या योगदान रहा ?
2. स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक पृष्ठभूमि में वे प्रमुख तत्व जिनके कारण स्त्री शिक्षा सम्बन्धित विचारधारा का निर्माण हुआ ?
3. वर्तमान में स्वामी विवेकानन्द के स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों की क्या उपादेयता है ?

6 शोध के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित है :

1. स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व का अध्ययन करना।
2. स्वामी विवेकानन्द के स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों को ज्ञात करना।
3. स्वामी विवेकानन्द के अनुसार स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों की वर्तमान समय में प्रसंगिकता ज्ञात करना।

7 शोध विधि :

प्रस्तुत शोध कार्य में शोध छात्रा द्वारा दार्शनिक विधि का प्रयोग किया गया हैं। विवेकानन्द संचयन की विषयवस्तु में नारी शिक्षा के तत्व ज्ञात करने के लिए विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

8 समस्या का परिसीमांकन :

प्रस्तुत शोध समस्या का परिसीमांकन निनलिखित पक्षों में किया गया है –

- प्रस्तुत शोध कार्य विवेकानन्द संचयन पुस्तक तक सीमित हैं।
- प्रस्तुत शोध कार्य स्वामी विवेकानन्द के विचारों तक सीमित हैं।

- प्रस्तुत शोध कार्य में स्वामी विवेकानन्द के स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों को ही लिखा गया हैं।

9 शोध निष्कर्ष

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता याद करना था। शोध छात्रा द्वारा विभिन्न शिक्षाविदों, समाजशास्त्रियों से औपचारिक साक्षात्कार द्वारा निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए–

1. भारतीय नारियां उनका भूत, वर्तमान और भविष्य प्रबुद्ध भारत दिसम्बर 1858 का संदर्भ देते हुए निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सवामी जी नारियों के भविष्य के प्रति चिंतित थे। उन्होंने कहा कि हमें नारियों को ऐसी स्थिति पहुँचा देना चाहिए, जहां वे अपनी समस्या को अपने ढंग से सुलझा सके।
2. वर्तमान समय में स्त्री समाज में स्त्री को लेकर असुरक्षा की भावना दिखाई देती है। इसके लिए स्वामी जी ने साहसी कन्याओं का विकास करने पर बल दिया। सम्भवतः स्वामी जी के स्वयं के जीवन में उनकी बहन के द्वारा आत्महत्या का प्रकरण उन्हें भारतीय नारी को सशक्त करने के लिए प्रेरित करता है।
3. स्वीमी जी ने अपने असंख्य भाषण, वार्तालाप, लेखों, टिप्पणियों में जगह–जगह पर उल्लेख किया है कि पाश्चात्य स्त्री की तुलना में भारतीय नारी का स्थान बहुत ऊँचा हैं।
4. भारतीय संस्कृति में स्त्री को सकारात्मक आत्मीय सौन्दर्य की शक्ति के रूप में माना जाता हैं। अतः उनको शिक्षित करने से ही समाज में निर्धनता दूर होगी तथा राष्ट्र का विकास होगा।
5. स्वामी जी के अनुसार आत्मा का कोई लिंग नहीं होता है। अतः आत्मा की स्थिति में यह ध्यान नहीं रहता है कि स्त्री है या पुरूष। ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त स्त्री राष्ट्र के प्रति जागरूक होगी, राष्ट्र का उत्थान करने वाली तथा शक्ति के प्रति जागरूक होगी।
6. वर्तमान समय में स्वामी विवेकानन्द की स्त्री शिक्षा सम्बन्धी अवधारणा की प्रासंगिकता सिद्ध करने हेतु स्वामी जी के पूर्ण नारीत्व का विचार पूर्ण स्वतन्त्रता का विचार है।
7. स्वामी जी स्त्री को एक शक्ति के रूप में स्वीकार करते हैं। उन्होंने कहा है कि भारत में माता परिवार का केन्द्र हैं तथा हमारा उच्च आदर्श हैं। वे हमारें लिए परमात्मा का प्रतिनिधि हैं।
8. स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन से एक बात स्पष्ट होती है कि सम्पन्नता या अर्थोपाजन जीवन का लक्ष्य नहीं हैं। व्यक्तियों या नारियों को विषम परिस्थितियों में चुनौतियों का सामना करना आना चाहिए।
9. स्वामी विवेकानन्द चरित्र तथा आध्यात्मिकत दृढ़ता पर बल देते हैं। स्वामी जी ने कहा है कि हमें बालकों व वालिकाओं को मन, वाणी और कर्म से ब्रह्मचर्य पालन करना सिखाना चाहिए।
10. स्वामी विवेकानन्द से एकाग्रता की शक्ति एवं आध्यात्मिक बल पर जोर दिया तथा शिक्षा में छात्रों की एकाग्रता के अभ्यास के लिए योगाभ्यास करना चाहिए।

निष्कर्ष रूप में स्वामी विवेकानन्द ने समकालीन परिस्थितियों के साथ–साथ भविष्य को भी ध्यान में रखकर शिक्षा व स्त्री शिक्षा के विभिन्न आयामों का राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में विचार किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. नन्दकिशोर शर्मा – भारतीय दार्शनिक समस्याएँ
   राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर–4
2. आर.आर. रस्क – शिक्षा के दार्शनिक आधार
3. सत्येन्द्र नाथ मजूमदार – विवेकानन्द चरित्र,
   स्वामी व्योमस्पानन्द – रामकृष्णमठ, दान्तोली, नागपुर – 440012
4. सुशील कुमार – युग पुरूष विवेकानन्द
   आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली
5. सुखिया, एस.पी. मेहरोत्रा – शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व
6. पारसनाथ राय – अनुसंधान परिचय
7. डॉ. कर्मसिंह शास्त्री (1991) – भारतीय दार्शनिक जीवन एवं दर्शन
   ललित पब्लिकेशन, डाइड वेल मैदान,
   शिमला
8. डॉ. रामशकल पाण्डेय (1990) – शिक्षा दर्शन
   विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
9. डब्ल्यू.एच. किल पैट्रिक (1991) – शिक्षा दर्शन
10. आर.ए. शर्मा – शिक्षा अनुसंधान
11. स्वामी विदेहात्मानन्द – स्वामी विवेकानन्द और उनका योगदान
12. स्वामी गम्भीरानन्द – युग नायक विवेकानन्द, प्रथम खण्ड,
    द्वितीय खण्ड, तृतीय खण्ड
    रामकृष्ण आश्रम मार्ग, धन्तोली, नागपुर
13. विवेकानन्द साहित्य संस्थान – प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय संस्करण
14. सिल नरसिंहा, पी. 2014 ''स्वामी विवेकानन्दस् कॉनसेप्ट ऑफ वुमन''।